वर्ष 2008 - 2009 की हिन्दी रिपोर्ट

राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान ,रूड़की भारत सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन संबंधी संवैधानिक उद्देश्यों को पूरा करने के लिए राजभाषा विभाग , गृह मंत्रालय द्वारा जारी समस्त आदेशों का अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए पूर्ण रूप से प्रतिबद्ध है । संस्थान संघ की राजभाषा नीति के व्यापक प्रचार-प्रसार तथा सार्थक कार्यान्वयन के लिए निरन्तर प्रयास करता आ रहा है । इस उद्देश्य को बढ़ावा देने के लिए संस्थान रोजमर्रा के कार्यों के साथ-साथ वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रकृति के कार्यों में भी राजभाषा हिंदी के प्रयोग को समुचित बढ़ावा दे रहा है । संस्थान में 80 प्रतिशत से भी ज्यादा पदाधिकारियों को हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त हो चुका है और इसलिए उसे भारत सरकार द्वारा राजभाषा नियम 10(4) के अन्तर्गत अधिसूचित किया जा चुका है । संस्थान राजभाषा विभाग के वार्षिक कार्यक्रम की ही तर्ज पर हर वर्ष अपना एक कार्यक्रम तैयार करता है जिसे पूरे साल के दौरान विभिन्न गतिविधियों के आयोजन के द्वारा कार्यान्वित किया जाता है ।

सरकारी कामकाज में राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को प्रेरणा एवं प्रोत्साहन के द्वारा बढ़ावा देने के पूरे प्रयास किए जाते हैं । राजभाषा हिंदी के प्रयोग के प्रति अधिकारियों एवं कर्मचारियों के मन में एक सार्थक सोच विकसित हो ,इसके लिए राजभाषा विभाग तथा जल संसाधन मंत्रालय के दिशा-निर्देशों के अनुसार अधिकारियों के लिए **"सर्वाधिक हिन्दी डिक्टेशन"** तथा कर्मचारियों के लिए **''सर्वाधिक हिन्दी कार्य"** प्रोत्साहन योजनाएं लागू की गई हैं ।

संस्थान में हो रहे हिंदी कार्यों का जायजा लेने के उद्देश्य से विभिन्न प्रभागों एवं अनुभागों तथा क्षेत्रीय केंद्रों का समय-समय पर निरीक्षण किया जाता है । हाल ही में संस्थान के मुख्यालय में प्रशासन अनुभाग , वित्त अनुभाग , रख-रखाव प्रभाग तथा निदेशक कार्यालय का हिंदी संबंधी निरीक्षण किया गया तथा निरीक्षण के दौरान पाई गयी कमियों को दूर करने हेतु निदेशक महोदय द्वारा सभी जिम्मेवार अधिकारियों को आवश्यक कार्रवाई हेतु निर्देश दिए गए ।

संस्थान में राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3(3) का समुचित अनुपालन सुनिश्चित किया जा रहा है । इस सिलिसिले में संस्थान परिसर में लगे सभी साइन बोर्डों एवं नाम-पट्टों को द्विभाषी रूप में बनवाया गया है । रबड़ की मोहरें , रजिस्टर , फाइल शीर्ष तथा मानक फार्म द्विभाषी रूप में उपलब्ध हैं तथा इन्हें प्रयोग में भी लाया जा रहा है ।

वर्ष 2008-2009 के दौरान राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग, प्रचार-प्रसार व विकास में अपेक्षित वृद्धि सुनिश्चित करने के उद्देश्य से संस्थान में अनेक गतिविधियाँ आयोजित की गई । इन गतिविधियों में से कुछ प्रमुख एवं महत्वपूर्ण गतिविधियाँ इस प्रकार है :-

- वर्ष के दौरान संस्थान के प्रशासन , वित्त , रख-रखाव तथा हिन्दी प्रकोष्ठ ने अपना अधिकांश सरकारी कामकाज हिन्दी में निष्पादित किया ।

संस्थान ने गत वर्षों की भॉति वर्ष 2008-09 के दौरान भी दिनांक 15 से 19 सितम्बर, 2008 तक हिंदी सप्ताह का आयोजन बड़ी धूम-धाम एवं हर्षोल्लास के साथ किया। सप्ताह का उद्घाटन **15 सितम्बर , 2008** को डॉ. योगेन्द्र नाथ शर्मा " अरूण " पूर्व प्रोफेसर एवं सदस्य कार्यकारणी परिषद , एच.एन.बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय तथा सदस्य केंद्रीय साहित्य अकादमी , नई दिल्ली के कर कमलों द्वारा किया गया । इस अवसर पर मुख्य अतिथि ने संस्थान की वार्षिक हिंदी पत्रिका " प्रवाहिनी " का विमोचन किया । हिंदी सप्ताह का समापन समारोह **19 सितम्बर , 2008** को आयोजित किया गया। माननीय शिक्षा , आबकारी एवं गन्ना मंत्री , उत्तराखण्ड श्री मदन कौशिक इस समारोह के मुख्य अतिथि थे । इस अवसर पर मुख्य अतिथि ने हिंदी सप्ताह के दौरान आयोजित निबंध , काव्य-पाठ , हिंदी आशुलिपि , हिंदी टाइपिंग , क्विज , वाद-विवाद तथा लिखित प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिताओं में बेहतर प्रदर्शन करने वाले प्रतिभागियों को पुरस्कार भी प्रदान किए ।

- संस्थान की वार्षिक हिंदी पत्रिका " प्रवाहिनी " के **15वें** अंक का प्रकाशन किया गया जिसमें संस्थान हीं नहीं अपितु संस्थानेत्तर व्यक्तियों के लेखों को भी प्रकाशित किया गया। पाँच उत्कृष्ट लेखों को पुरस्कार भी प्रदान किये गए ।
- हर वर्ष की तरह वर्ष **2007-2008** की वार्षिक रिपोर्ट के अंग्रेजी पाठ का हिंदी रूपान्तरण अल्प समय तथा सीमित स्टाफ के होते हुए भी संस्थान के कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त पदाधिकारियों की सेवाएं लेकर इसे निर्धारित समय पर तैयार कर प्रस्तुत किया ।
- दिनांक **17 नवम्बर , 2008** को जल संसाधन मंत्रालय ने संस्थान में हो रहे विभिन्न हिंदी कार्यों का निरीक्षण किया। इस प्रयोजन के लिए मंत्रालय की निदेशक(रा.भा.) श्रीमती राजकुमारी देव ने संस्थान का राजभाषायी निरीक्षण किया तथा हिंदी में किए जा रहे विभिन्न कार्यों पर संतोष व्यक्त करते हुए राजभाषा हिंदीं के प्रचार-प्रसार एवं प्रयोग को बढ़ावा देने के लिहाज से कुछ महत्वपूर्ण टिप्स भी दिए ।
- संस्थान नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति , हरिद्वार का सदस्य संगठन होने के नाते नराकास द्वारा आयोजित की जाने वाली सभी गतिविधियों में नियमित रूप से भाग लेता रहा है । नराकास हरिद्वार द्वारा **28 जनवरी , 2009** को आयोजित 7वीं अर्ध-वार्षिक बैठक

में संस्थान के निदेशक , वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी , राजभाषा प्रभारी तथा वरिष्ठ हिंदी अनुवादक ने भाग लिया । निदेशक राजस ने उक्त बैठक में राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के संदर्भ में अपने महत्वपूर्ण सुझाव भी दिए ।

- संस्थान द्वारा किए जा रहे हिंदी कार्यों की समीक्षा तथा इनमें और अधिक संवृद्धि सुनिश्चित करने तथा कारगर रणनीति बनाने के दृष्टिकोण से **27 फरवरी ,2009** को राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 47वीं बैठक आयोजित की गई । इस बैठक में पिछली बैठक की अनुवर्ती कार्रवाई की समीक्षा की गई तथा आगामी तिमाही के लिए कार्य योजना तैयार की गई । राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग संबंधी कई महत्वपूर्ण विषयों पर व्यापक चर्चा-परिचर्चा भी की गई ।
- वर्ष 2007-2008 के लिए संस्थान के **चार कर्मचारियों** (श्री जसपाल सिंह बिष्ट , श्री सूरज कोतवाल ,श्री नरेश सैनी तथा श्री सुखपाल शर्मा) को " सर्वाधिक हिंदी कार्य " प्रोत्साहन योजना के तहत पुरस्कृत किया गया ।
- नराकास हरिद्वार द्वारा **18 मार्च ,2009** को बी.एच.ई.एल. हरिद्वार में आयोजित समन्वयकर्ता सम्मेलन में संस्थान के तीन कर्मचारियों (श्री पी.के.उनियाल , श्री पवन कुमार एवं श्री दौलत राम) ने प्रतिभाग कर संस्थान का प्रतिनिधित्व किया ।
- नराकास हरिद्वार द्वारा **20 मार्च , 2009** को बी.एच.ई.एल. हरिद्वार में आयोजित हिंदी पत्र-परिपत्र लेखन एवं अनुवाद प्रतियोगिताओं में संस्थान के चार कर्मचारियों (श्री पी.के.अग्रवाल , श्री अवधेश शर्मा , श्री महेन्द्र सिंह तथा श्री टी.आर.सपरा) ने प्रतिभाग कर संस्थान का प्रतिनिधित्व किया ।
- संस्थान के पदाधिकारियों को राजभाषा हिंदी संबंधी प्रशिक्षण देने तथा उनके मन में हिंदी के प्रयोग के प्रति पनपी झिझक को दूर करने के दृष्टिकोण से **26 मार्च , 2009** को " राजभाषा नीति कार्यान्वयन " विषय पर एक हिंदी कार्यशाला आयोजित की गई । इस कार्याशाला के लिए नराकास , हरिद्वार ने फैकल्टी उपलब्ध कराई । कार्यशाला में बी.एच.ई.एल. हरिद्वार के अपर महाप्रबंधक (मा.सं.) श्री एन.के.गुप्ता तथा श्री श्रीनिवास जोशी,वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी ने व्याख्यान एवं प्रशिक्षण दिया । इस कार्यशाला में कुल 23 पदाधिकारियों ने भाग लिया ।

* * * * *